RAJAB KI BAHAREN MA-A NAFLI ROZON KE FAZAIL
(HINDI BAYAAN)

रजब की बहारें

(मअ़ नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल)

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में
होने वाला सुन्नतों भरा हिन्दी बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف

(**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद आने पर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िम्नन मस्जिद में खाना, पीना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (मस्जिद में) तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी आया, उस ने नमाज़ पढ़ी और फिर इन कलिमात से दुआ़ मांगी : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे बख़्श दे और मुझ पर रह़म फ़रमा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عَجِلْتَ اَیُّهَا الْمُصَلِّیْ ऐ नमाज़ी तू ने जल्दी की। اِذَا صَلَّیْتَ فَقَعَدْتَ فَاحْمَدِ اللّٰهَ بِمَا هُوَ اَهْلُهٗ، وَصَلِّ عَلَیَّ ثُمَّ ادْعُهُ जब तू नमाज़ पढ़ कर बैठे तो (पहले) **अल्लाह** तआ़ला की ऐसी ह़म्द कर जो उस के लाइक़ है, फिर मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ और इस के बा'द दुआ़ मांग।

रावी का बयान है कि इस के बा'द एक और शख़्स ने नमाज़ पढ़ी, फिर (फ़ारिग़ हो कर) **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द बयान की और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर दुरूदे पाक पढ़ा, तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَیُّهَا الْمُصَلِّیْ اُدْعُ تُجَبْ ऐ नमाज़ी ! तू दुआ़ मांग, क़बूल की जाएगी।

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی جامع الدعوات الخ، ۵/۲۹۰، حدیث:۳۴۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा रिवायत से मा'लूम हुवा कि अगर दुआ़ मांगने वाला क़बूलिय्यत का त़ालिब है तो उसे चाहिये कि दुआ़ के अव्वल व आख़िर सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ा करे।

बचें बेकार बातों से, पढ़े ऐ काश ! कसरत से
तेरे महबूब पर हरदम दुरूदे पाक हम, मौला !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّةُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ "मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

www.dawateislami.net

बयान सुनने की नियतें

۞निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه، اُذْكُرُوا اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की नियतें

मैं भी नियत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ۞ देख कर बयान करूंगा ۞ पारह 14 सूरतुन्नह्ल, आयत 125 :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ماذکر عن بنی اسرائیل، ۲/۴۶۲، حدیث: ۳۴۶۱) में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रजब का एह़तिराम और इस का इन्आ़म

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी माया नाज़ तालीफ़ फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) के सफ़ह़ा 1355 पर एक ह़िकायत बयान फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दौर का वाक़िआ़ है कि एक शख़्स मुद्दत से किसी औ़रत पर आ़शिक़ था। एक बार उस ने अपनी मा'शूक़ा पर क़ाबू पा लिया। लोगों की हल चल से उस ने अन्दाज़ा लगाया कि लोग चांद देख रहे हैं, उस ने उस औ़रत से पूछा : लोग किस माह का चांद देख रहे हैं ? उस ने कहा : **'रजब का।'** वोह शख़्स ह़ालांकि ग़ैर मुस्लिम था मगर रजब शरीफ़ का नाम सुनते ही ता'ज़ीमन फ़ौरन अलग हो गया और **'गुनाह के काम'** से बाज़ रहा। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हुक्म हुवा कि हमारे फ़ुलां बन्दे की मुलाक़ात को जाओ। आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

तशरीफ़ ले गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म और अपनी तशरीफ़ आवरी का सबब इरशाद फ़रमाया। येह सुनते ही उस का दिल नूरे इस्लाम से जग–मगा उठा और उस ने फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1355)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखीं आप ने रजब की बहारें ! रजबुल मुरज्जब की ता'ज़ीम कर के जब एक ग़ैर मुस्लिम को ईमान की दौलत नसीब हो गई तो ज़रा सोचिये कि जो मुसलमान हो कर इस माह की ता'ज़ीम करते हुवे इस में गुनाह न करे, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, फ़रेब, वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों से हत्तल इमकान बचने की कोशिश करे नीज़ पूरा महीना इबादत व रियाज़त में गुज़ारे, नमाज़ों की पाबन्दी करे, इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल पढ़े, नमाज़े तहज्जुद अदा करे, इस माह के नफ़्ली रोज़े भी रखे, शब में क़ियाम व तिलावते क़ुरआन भी करे तो ऐसा शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कैसे कैसे इन्आमात व इकरामात का मुस्तहिक़ होगा ? बहर ह़ाल ! हमें चाहिये कि जब भी येह बा बरकत महीना तशरीफ़ लाए तो इस में ख़ूब ख़ूब इबादत व रियाज़त करें, ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मतों और बरकतों से माला माल हों।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लफ़्ज़े रजब के मुख़्तलिफ़ मआ़नी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले 'कफ़न की वापसी मअ़ रजबुल मुरज्जब की बहारें' के सफ़ह़ा नम्बर 2 पर इरशाद फ़रमाते हैं : '**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**' में है कि ۞ रजब दर अस्ल तरजीब से मुश्तक़ (या'नी निकला) है, इस के मा'ना हैं : ता'ज़ीम करना। ۞ इस को अल असब (या'नी सब से तेज़ बहाव) भी कहते हैं, इस लिये इस माहे मुबारक में तौबा करने वालों पर रह़मत का बहाव तेज़ हो जाता है और इबादत करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है ۞ इसे अल असम्म (या'नी ख़ूब बहरा) भी कहते हैं क्यूंकि इस में जंगो जदल की आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं देती और ۞ इसे रजब भी कहा जाता है कि जन्नत की एक नह्र का नाम '**रजब**' है जिस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा ठन्डा है, इस नह्र से वोही (शख़्स पानी) पियेगा जो रजब के महीने में रोज़े रखेगा। (مُكاشَفَةُ القُلُوب ص ٣٠١ دارالكتب العلمية بيروت)

ग़ुन्यतुत्तालिबीन में है कि इस माह को 'शहरे रजम' भी कहते हैं क्यूंकि इस में शैत़ानों को रजम या'नी संग सार किया जाता है ताकि वोह मुसलमानों को ईज़ा न दें। इस माह को असम्म (या'नी ख़ूब बहरा) भी कहते हैं क्यूंकि इस माह में किसी क़ौम पर अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब के नाज़िल होने के बारे में नहीं सुना गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने गुज़श्ता उम्मतों को हर महीने में अ़ज़ाब दिया और इस माह में किसी क़ौम को अ़ज़ाब न दिया। (غُنْيَةُ الطَّالِبِين ص ٢٢٩)

हुरमत वाले 4 महीने

रजबुल मुरज्जब भी उन चार महीनों में से एक है, जिन की हुरमत व अ़ज़मत का ज़िक्र क़ुरआने पाक में किया गया है। जैसा कि सूरतुत्तौबा की आयत नम्बर 36 में इन महीनों की हुरमत के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद होता है :

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُۙ (پ۱۰، التوبۃ:۳۶)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक महीनों की गिनती **अल्लाह** के नज़्दीक बारह महीने हैं **अल्लाह** की किताब में जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए, उन में से चार हुरमत वाले हैं येह सीधा दीन है।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस आयते करीमा के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : (हुरमत वाले महीने चार हैं) तीन तो मिले हुवे (या'नी) **ज़ुल क़ा'दा, ज़ुल ह़िज्जा, मुह़र्रम** और एक अ़लाह़िदा या'नी **रजब**। येह (चारों महीने) इस्लाम से पहले ही मोह़तरम माने जाते थे (मज़ीद फ़रमाते हैं कि) इन का एह़तिराम अब भी बाक़ी है कि इन में इ़बादात की जावें, गुनाह से बचा जावे। इस से मा'लूम हुवा कि (जब) तमाम महीने, तमाम दिन, तमाम जमाअ़तें, दरजे में बराबर नहीं तो इन्सान आपस में बराबर कैसे हो सकते हैं ? (नूरुल इ़रफ़ान, पारह. 10, अत्तौबा, तह़्तल आयत : 36 मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मक़ामे ग़ौर है कि जब सब महीने आपस में मक़ाम व मर्तबे के लिह़ाज़ से बराबर नहीं हैं तो सब इन्सान बराबर कैसे हो सकते हैं ? यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तमाम वलियों और नबियों को बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में एक ख़ास मक़ाम व मर्तबा ह़ासिल होता है, जिस की वजह से वोह नुफ़ूसे क़ुदसिया आ़म इन्सानों से मुमताज़ होते हैं। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि येह महीने इस्लाम से पहले भी क़ाबिले एह़तिराम थे और इस्लाम ने भी इन महीनों के एह़तिराम को बाक़ी रखा। बल्कि इन के एह़तिराम को मज़ीद बढ़ा दिया और इन महीनों में ख़ुसूसिय्यत के साथ गुनाहों से बाज़ रहने का हुक्म दिया। जैसा कि इरशाद होता है :

فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (پ۱۰، التوبۃ:۳۶)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो इन महीनो में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो।

या'नी यहां येह बयान फ़रमाया गया कि इन महीनों की इ़ज़्ज़त इस त़रह़ करो और इन को क़ाबिले एह़तिराम इस त़रह़ बनाओ कि "ख़ुसूसिय्यत से इन चार महीनों में कोई गुनाह न करो कि इन में गुनाह करना अपने पर ज़ुल्म करना है।" (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 306)

लिहाज़ा हमें चाहिये कि इस माहे मुबारक की आमद पर हम अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा कर दें, इ़बादत व रियाज़त में मश्ग़ूल हो जाएं, गुनाहों से नाता तोड़ कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ से लौ लगा लें। झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, गाली गलोच, वालिदैन की नाफ़रमानी, मुसलमानों की दिल आज़ारी, रिश्ते दारों से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी, फ़िल्मों डिरामों और हर क़िस्म के गुनाहों से बचते हुवे साबिक़ा गुनाहों से सच्ची तौबा करें और आयिन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा कर लें नीज़ नमाज़ और दीगर फ़राइज़ की पाबन्दी करने के साथ साथ नवाफ़िल व मुस्तह़ब्बात की भी अदाएगी की कोशिश में लग जाएं।

गुनाहों पर कमर बस्ता मुसलमान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! ह़ालात सुधरने की बजाए दिन ब दिन बिगड़ते ही चले जा रहे हैं। फ़ी ज़माना मुसलमानों के किरदार की बद ह़ाली और इन के अख़्लाक़ की पस्ती किसी से ढकी छुपी नहीं। गुनाहों के ज़राएअ़ इस क़दर आ़म हो चुके हैं कि हर उठने वाला क़दम इन्सान को

www.dawateislami.net

दानिस्ता व ना दानिस्ता किसी न किसी गुनाह की त़रफ़ ले ही जाता है । अभी कुछ ही अ़र्से पहले की बात है कि लोग रेडियो पर गाने और डिरामे सुन लिया करते थे, फिर टीवी ईजाद हुवा तो आवाज़ के साथ साथ तस्वीर भी दिखाई देने लगी, मगर इस में कमी येह थी कि जो दिखाया जाता था, सिर्फ़ वोही देख सकते थे, अपनी मर्ज़ी का कोई अ़मल दख़्ल न था, लेकिन वी सी आर की ईजाद के बा'द येह कमी भी पूरी हो गई, फिर यके बा'द दीगरे डिश एन्टीना और केबल ने ह़यासोज़ मनाज़िर दिखाने के सेंकड़ों मवाक़ेअ़ फ़राहम कर के गुनाहों की यलग़ार में मज़ीद तेज़ी पैदा कर दी, मगर हर वक़्त फ़िल्में डिरामे और गाने बाजे देखने सुनने वालों को एक ही जगह टिक कर बैठना पड़ता था, क्यूंकि टीवी बड़ा होता है हर वक़्त साथ रखना मुमकिन न था, लिहाज़ा MP3, MP4 और मोबाइल फ़ोन जैसे छोटे छोटे इलेक्ट्रोनिक आलात बल्कि मोबाइल में मौजूद इन्टरनेट की तमाम तर सहूलिय्यात ने गुनाह करने की राह में दरपेश तमाम रुकावटें दूर कर दीं और यूं मुआ़शरे के बे शुमार अफ़राद इन चीज़ों के बेजा इस्ति'माल के ज़रीए़ गुनाहों के भंवर में फंसते चले जा रहे हैं और मज़ीद अफ़्सोस तो येह है कि दिन भर जाने अन्जाने में कितने गुनाह करते हैं ! मगर तौबा व नदामत तो कुजा इस का एह़सास तक नहीं होता । आज फ़िल्में डिरामे देख कर, गाने बाजे सुन कर, झूट, ग़ीबत, तोहमत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी और गाली गलोच जैसे गुनाहों में मुलव्विस हो कर, वालिदैन की नाफ़रमानी, मुसलमानों की ह़क़ तलफ़ी व दिल आज़ारी, चोरी, डाका ज़नी, क़त्लो ग़ारत गिरी और शराब नोशी जैसे कबीरा गुनाहों में पड़ कर किस का सर शर्म से झुकता है ? कौन है जो इन गुनाहों में मुब्तला हो कर कफ़े अफ़्सोस मलता हो ? कौन है जो नमाज़ें क़ज़ा हो जाने पर नदामत के आंसू बहाता हो ? आज कल तो उ़मूमन नमाज़ी नज़र आने वाले भी फ़ज्र की नमाज़ में सुस्ती कर जाते हैं और इस पर किसी त़रह़ का अफ़्सोस भी नहीं करते, इस के बर अ़क्स अगर नव (9:00) बजे ऑफ़िस पहुंचना है और साढ़े आठ (8:30) बजे आंख खुली तो फ़िक्र से बे ह़ाल होने लगते हैं कि कब नाश्ता करूंगा, कब तय्यार होऊंगा और कब दफ़्तर पहुंचूंगा, इसी पर बस नहीं बल्कि घर वालों को डांटते भी होंगे कि जल्दी क्यूं नहीं उठाया ? ऑफ़िस के लिये लेट उठने पर तो बड़ा अफ़्सोस होता है ! मगर फ़ज्र में आंख न खुलने पर कोई शर्मिन्दगी नहीं होती, लेट होने की सूरत में तनख़्वाह कट जाने का डर तो है लेकिन फ़ज्र की नमाज़ न पढ़ने के सबब जो दर्दनाक अ़ज़ाब हो सकता है, उस का कोई ख़ौफ़ नहीं ।

आज का नौ जवान सोने की चैन और मुख़्तलिफ़ धातों की अंगूठियां, कानों में बालियां लटकाने, ऐसा लिबास जो बे पर्दगी का बाइ़स बने और कड़े पहनने नीज़ औ़रतों की त़रह़ लम्बे लम्बे बाल रख कर घूमने में फ़ख़्र महसूस करता है, बाप अपनी बे पर्दा फ़ेशन ज़दा लड़की को देख कर फ़ख़्र करता है, मंगेतर लड़की का हाथ पकड़ कर मंगनी की अंगूठी पहना कर कई नाजाइज़ व ह़राम कामों का मुर्तकिब होता है तो लोग ख़ुशी से फूले नहीं समाते, इसी त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ मुन्डवाने और मग़रिबी फ़ेशन के मुत़ाबिक़ लिबास अपनाने पर भी फ़ख़्र किया जाता है । अल ग़रज़ इस त़रह़ के कितने ही काम हैं जो शरअ़न नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं, लेकिन बद क़िस्मती से आज का मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मन्अ़ करने के बा वुजूद इन कामों को फ़ख़्रिय्या अन्दाज़ में न सिर्फ़ ख़ुद करता है बल्कि इन पर इतराते हुवे, पसे पर्दा इन की तशहीर भी कर ही देता है । अब तो नौबत यहां तक जा

www.dawateislami.net

पहुंची है कि अगर कोई शख़्स मदनी माहौल की ब दौलत कोई नेक काम करना चाहे, मसलन कोई इस्लामी बहन शरई पर्दा करना चाहे या कोई इस्लामी भाई सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी रखना चाहे, तो उन की राह में रोड़े अटकाए जाते और उन पर त़ा'न व तशनीअ़ के तीर बरसाए जाते हैं।

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है *उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है*

गुनाह पर गुनाह.....आख़िर क्यूं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा सोचिये ! ऐसा क्यूं है ? हम गुनाहों के दल दल में ग़र्क़ होते चले जा रहे हैं, लेकिन हमारे कान पे जूं तक नहीं रेंगती ? हम दिन रात गुनाहों में धुत रहते हैं, लेकिन हमें घबराहट तक नहीं होती। आख़िर ऐसा क्यूं है ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि गुनाह करते करते हम गुनाहों के इतने आ़दी हो गए हैं कि हमें गुनाह करने का एह़सास तक नहीं रहा। याद रखिये ! बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने फ़रमाया है : बेशक गुनाह करने से दिल सियाह हो जाता है और दिल की सियाही की अ़लामत येह होती है कि गुनाहों से घबराहट नहीं होती, त़ाअ़त (या'नी इबादत) के लिये मौक़अ़ नहीं मिलता, नसीह़त से कोई फ़ाइदा नहीं होता (या'नी नसीह़त व बयान सुन कर दिल पर असर नहीं होता)।'' (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 429)

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''जब कोई बन्दा गुनाह कर लेता है, तो उस के क़ल्ब (या'नी दिल) पर एक सियाह (या'नी काला) नुक्ता लग जाता है, लेकिन जब वोह **अल्लाह** तआ़ला से मग़फ़िरत त़लब करता है और तौबा कर लेता है तो उस का क़ल्ब साफ़ कर दिया जाता है और अगर वोह (तौबा के बजाए दो बारा) गुनाह कर ले तो येह सियाही (या'नी कालक) मज़ीद बढ़ जाती है, यहां तक कि उस का सारा दिल सियाह हो जाता है।''

(ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ویل للمطففین، ۲۲۰۵، حدیث: ۳۳۴۵)

मुह़ीत़ दिल पे हुवा हाए नफ़्से अम्मारा *दिमाग़ पर मेरे इब्लीस छा गया या रब !*
मैं कर के तौबा पलट कर गुनाह करता हूं *ह़क़ीक़ी तौबा का कर दे शरफ़ अ़त़ा या रब !*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ اَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रजब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महीना है

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : خَيْرَةُ اللهِ مِنَ الشُّهُوْرِ شَهْرُ رَجَبٍ وَهُوَ شَهْرُ اللهِ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा महीनों में रजब का महीना है, येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है। مَنْ عَظَّمَ شَهْرَ رَجَبٍ فَقَدْ عَظَّمَ اَمْرَ اللهِ जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महीने रजबुल मुरज्जब की ता'ज़ीम की, उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ता'ज़ीम की।

وَمَنْ عَظَّمَ اَمْرَ اللهِ اَدْخَلَهُ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ وَاَوْجَبَ لَهُ رِضْوَانَهُ الْاَكْبَر

और जिस ने ख़ुदा तआ़ला के हुक्म की ता'ज़ीम की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ने'मतों वाले बाग़ात में दाख़िल करेगा और उस के लिये अपनी बड़ी रिज़ा वाजिब करेगा। (شعب الایمان: ۳/۳۷۴، حدیث ۳۸۱۳)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इस ह़दीसे पाक से माहे रजबुल मुरज्जब की ज़बरदस्त शानो अ़ज़मत का पता चलता है और वोह इस त़रह़ कि यूं तो तमाम ही महीने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हैं और सब को उसी ने पैदा फ़रमाया है, लेकिन ख़ुसूसिय्यत के साथ रजब के बारे में फ़रमाया गया कि रजबुल मुरज्जब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है । नीज़ ह़दीसे पाक में येह भी बयान किया गया है कि जिस ने इस महीने की ता'ज़ीम की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ने'मतों वाले बाग़ात अ़त़ा फ़रमाएगा और उस से राज़ी हो जाएगा । यक़ीनन हम में से हर एक की ख़्वाहिश है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से राज़ी रहे और हर कोई येह चाहता है कि वोह अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात पा कर जन्नत में चला जाए । तो इस ख़्वाहिश की तक्मील के अस्बाब में से एक सबब माहे रजब की ता'ज़ीम करना भी है । हमें चाहिये कि इस महीने की ता'ज़ीम करें, इस त़रह़ कि इसे इ़बादत व रियाज़त में गुज़ारें और इस में अपने आप को गुनाहों से बचाएं और नेकियों की ख़ूब कसरत कर के इस महीने में इ़बादत के बीज बोने की कोशिश करें, तिलावते क़ुरआन करें, नवाफ़िल पढ़ें, इशराक़ व चाश्त समेत अव्वाबीन के नवाफ़िल अदा करें, जिस क़दर हो सके रोज़े रखें और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ कुतुब का मुत़ालआ़ करें वग़ैरा वग़ैरा । मगर अफ़्सोस ! लोगों की एक कसीर ता'दाद ऐसी भी है जिसे इस माहे मुक़द्दस की अ़ज़मत की कोई परवा नहीं होती । इस मुबारक महीने में इ़बादत व रियाज़त करना तो दर किनार, उन्हें तो येह भी मा'लूम नहीं होता कि येह माहे मुबारक कब आया और कब गया, उन्हें अन्दाज़ा ही नहीं कि येह भी कोई क़ाबिले एह़तिराम महीना है, येही वजह है कि वोह लोग अपनी ज़िन्दगी के दीगर अय्याम की त़रह़ इस मुबारक महीने को भी ग़फ़्लत और सुस्ती में गुज़ार देते हैं और शायद इस की एक अहम वजह येह भी है कि उ़मूमन लोगों को ऐसा अच्छा माह़ोल मयस्सर ही नहीं होता कि जहां गुनाहों से बचने के साथ नेकियां करने और इन मुबारक महीनों के इस्तिक़्बाल और इन की ता'ज़ीम करने का ज़ेह्न दिया जाता हो ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में न सिर्फ़ इन मुक़द्दस महीनों की ता'ज़ीम का ज़ेह्न दिया जाता है बल्कि इस पर अ़मल की भी तरग़ीब दिलाई जाती है । इस लिये अगर हम सभी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाएं तो नेकियां करना और गुनाहों से बचना और इन मुक़द्दस महीनों की ता'ज़ीम करना हमारे लिये बहुत आसान हो जाएगा । यक़ीन मानिये कि नेक बनने, गुनाहों से बचने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये फ़ी ज़माना दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल किसी ने'मत से कम नहीं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि न सिर्फ़ ख़ुद हर दम दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहें बल्कि दूसरों को भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की तरग़ीब दिलाते रहें । याद रखिये कि आप की नेकी की दा'वत से अगर सिर्फ़ एक फ़र्द ही इ़श्क़े रसूल का जाम ग़ट ग़टा गया, राहे हिदायत पा गया, उसे दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल भा गया, वोह सुन्नत की शाहराह पर आ गया, नमाज़ों की लज़्ज़तें पा गया, अपने आप को नेक बन्दों में खपा गया, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का भी बेड़ा पार हो जाएगा । नबिय्ये ह़ाशिर, रसूले साबिरो शाकिर, मह़बूबे रब्बे क़ादिर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल

www.dawateislami.net

मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी शख़्स को राहे रास्त पर ले आए तो येह तुम्हारे लिये उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज तुलूअ़ होता है। (या'नी दुन्या की तमाम चीज़ों से बेहतर है)

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ لِلطَّبَرانی ج ۱ ص ۳۳۲ حدیث ۹۹۴) (अज़ नेकी की दा'वत, स. 304)

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम — करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब !
करम से 'नेकी की दा'वत' का ख़ूब जज़्बा दे — दूं धूम सुन्नते महबूब की मचा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अह़ादीसे मुबारका और रजब के फ़ज़ाइल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये 'रजब' के तीन हुरूफ़ की निस्बत से रजब की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल तीन अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं। चुनान्चे,

﴾1﴿ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इरशाद फ़रमाया : तुम पर लाज़िम है कि माहे रजब की रातें क़ियाम में गुज़ारो और इस के दिन रोज़े की ह़ालत में गुज़ारो। और जो शख़्स इस महीने के किसी दिन में पचास (रक्अ़त) नमाज़ पढ़े, इस त़रह़ कि हर रक्अ़त में ब क़दरे इस्तित़ाअ़त कुरआने पाक की तिलावत करे, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को उस के बालों और रुओं की ता'दाद के बराबर नेकियां अ़त़ा फ़रमाएगा। (تاریخ دمشق، ۲۹۱۴۳، ذکر علی بن یعقوب بن یوسف بن عمران البلاذری)

﴾2﴿ एक बार प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रजब के महीने में जुमुआ़ का ख़ुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! बेशक तुम पर एक अ़ज़ीम महीना साया फ़िगन है, इस महीने में नेकियों का अज्र दुगना दिया जाता है, इस में दुआ़एं क़बूल होती हैं, इस में मुश्किलात ह़ल होती हैं, और इस महीने में मोमिन की दुआ़ रद्द नहीं होती, पस जो शख़्स इस महीने में कोई भलाई का काम करे तो उस को कई गुना अज्र दिया जाता है। (تاریخ دمشق، ۲۹۱۴۳، ذکر علی بن یعقوب بن یوسف بن عمران البلاذری)

﴾3﴿ सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : रजब के महीने में इस्तिग़फ़ार की कसरत करो। पस बे शक इस के हर हर लम्ह़े में कई कई अफ़राद को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आग से ख़लासी अ़त़ा फ़रमाता है। (کنز العمال، ج ۱، حصہ اول، ص ۲۴۳، کتاب الاذکار، الفصل الاول فی الاستغفار، حدیث: ۲۰۹۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि अह़ादीसे मुबारका में माहे रजब के कैसे आ़लीशान फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। ख़ास त़ौर पर पहली ह़दीसे पाक हमें एक ज़बरदस्त मदनी सोच फ़राहम करती है और वोह येह है कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे रजबुल मुरज्जब की रातों में ख़ूब इबादत करने और दिन में रोज़े रखने की जब सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को इस क़दर ज़ियादा ताकीद फ़रमाई तो हमें इस महीने में किस क़दर इबादत व रियाज़त की ज़रूरत है। और फिर दूसरी ह़दीसे पाक में बयान फ़रमाया गया कि माहे रजब ऐसा अ़ज़ीम महीना है कि इस में दुआ़एं मक़्बूल होती हैं और मुश्किलात ह़ल होती हैं नीज़ इस माह में की जाने वाली

www.dawateislami.net

भलाई का अज्र कई गुना बढ़ा दिया जाता है। जब कि आख़िरी ह़दीसे पाक में एक नसीह़त और एक बिशारत बयान की गई है। नसीह़त येह है कि माहे रजब में इस्तिग़फ़ार की कसरत करनी चाहिये और बिशारत येह है कि इस माहे मुक़द्दस की हर हर साअ़त में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कई कई अफ़राद को नारे दोज़ख़ से नजात का परवाना अ़ता फ़रमाता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी इस महीने में इस्तिग़फ़ार की कसरत करें ताकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हमें भी जहन्नम से आज़ादी पाने वाले खुश बख़्तों में शामिल फ़रमा दे।

याद रखिये ! ज़िन्दगी में तौबा की तौफ़ीक़ और इस का मौक़अ़ मिलना बहुत बड़ी सआ़दत की बात है। यूं तो बहुत से लोगों की ज़िन्दगी में शबे मे'राज, शबे बराअत और शबे क़द्र जैसी मुक़द्दस रातें और इसी त़रह़ रजब, शा'बान और रमज़ान जैसे मुबारक महीने बार बार आते हैं, मगर उन्हें तौबा की तौफ़ीक़ नहीं मिलती, बल्कि बहुत से लोग तो शायद इन मुतबर्रक (مُ-تَ-بَر-رَك या'नी बा बरकत) लम्ह़ात में हर बार येह सोच कर रह जाते होंगे कि **'अभी बहुत ज़िन्दगी पड़ी है, फिर कभी तौबा कर लेंगे'**। मगर अफ़्सोस ! तौबा से ग़फ़्लत करते करते बिल आख़िर मौत आ जाती है और वोह इस सआ़दत से मह़रूम रह जाते हैं। वाक़ेई ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं, मौत का कोई पता नहीं, लिहाज़ा हमें हरगिज़ हरगिज़ तौबा व इस्तिग़फ़ार से ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये। ख़ुद रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मत की तरग़ीब के लिये दिन में कई कई बार तौबा किया करते थे। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 656 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **'फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन'** जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा नम्बर 164 पर है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : يَا اَيُّهَا النَّاسُ تُوبُوا اِلَى اللهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ، فَاِنِّیْ اَتُوْبُ فِی الْيَوْمِ اِلَيْهِ مِائَةَ مَرَّةٍ (مسلم،کتاب الذکر والدعا والتوبة والاستغفار، باب استحباب الاستغفار والاستکثار منه، ص ١٤٤٩، حدیث:٢٧٠٣) ऐ लोगो ! अल्लाह से तौबा करो और उस से बख़्शिश चाहो बेशक मैं, रोज़ाना 100 मरतबा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर तौबा करता हूं।

(फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम, स. 164)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : 'तौबा व इस्तिग़फ़ार भी नमाज़, रोज़े की त़रह़ इबादत है। इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब कसरत तौबा व इस्तिग़फ़ार किया करते थे। वरना हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सूम हैं, गुनाह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब भी नहीं आता, सूफ़िया फ़रमाते हैं कि हम लोग गुनाह कर के तौबा करते हैं और वोह ह़ज़रात इबादत कर के तौबा करते हैं। (ملخصاً از مرأة المناجيح، ٣/ ٣٥٣ از فيضانِ رياض الصالحين، ص ١٦٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्तिग़फ़ार करने के बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात हैं। याद रखिये ! इस्तिग़फ़ार का मत़लब है **'मग़फ़िरत त़लब करना, गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगना, बख़्शिश चाहना'** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इस्तिग़फ़ार के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

وَ الَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۫ وَ مَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۳۵)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह कि जब कोई बे हयाई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के।

तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर में है कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो इब्लीस ने चीख़ चीख़ कर अपने लश्कर को पुकारा, अपने सर पर ख़ाक डाली और ख़ूब आहो ज़ारी की, ह़त्ता कि तमाम काइनात से उस के चेले जम्अ़ हो गए और बोले : ''ऐ हमारे सरदार तुझे क्या हो गया ?'' वोह बोला : ''क़ुरआन में एक ऐसी आयत उतरी है कि इस के बा'द किसी बनी आदम को कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देगा।'' उस के लश्करियों ने कहा : ''वोह कौन सी आयत है ?'' इब्लीस ने उन्हें (मज़्कूरा आयत की) ख़बर दी। तो उस के चेलों ने कहा : ''हम उन पर ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोल देंगे कि वोह तौबा व इस्तिग़्फ़ार न कर पाएंगे और वोह इसी ख़याल में होंगे कि हम ह़क़ पर हैं येह सुन कर शैत़ान ख़ुश हो गया।''

(در منثور، پ۴، اٰل عمران، تحت الآیۃ: ۱۳۵، ۲/۳۲۶)

तौबा की राह में रुकावट

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत में शैत़ान के चेलों का येह कहना इन्तिहाई क़ाबिले तश्वीश है कि हम उन पर ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोल देंगे कि वोह तौबा व इस्तिग़्फ़ार न कर पाएंगे और वोह इसी ख़याल में होंगे कि वोह ह़क़ पर हैं। गोया कि शयात़ीन की येह बात हमारे लिये एक चेलेन्ज की ह़ैसिय्यत रखती है, लिहाज़ा हमें इस चेलेन्ज को क़बूल करते हुवे मैदाने अ़मल में उतर जाना चाहिये और ख़ुद से येह अ़हद करना चाहिये कि हम हर बुरे काम से न सिर्फ़ ख़ुद बचते रहेंगे बल्कि दूसरों को भी नेकी का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते रहेंगे नीज़ अगर ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत हम से कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो इज़्ज़ो नदामत (आ़जिज़ी व शर्मिन्दगी) के साथ फ़ौरन अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगेंगे।

आओ गुनहगारो ! मग़्फ़िरत मांग लो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : 'शैत़ान ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कहा : وَعِزَّتِكَ یَا رَبِّ لَا اَبْرَحُ اُغْوِیْ عِبَادَكَ مَا دَامَتْ اَرْوَاحُهُمْ فِیْ اَجْسَادِهِمْ या'नी ऐ मेरे रब ! मुझे तेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक बन्दों के जिस्मों में रूह़ बाक़ी है, मैं उन्हें बहकाता रहूंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : وَعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ لَا اَزَالُ اَغْفِرُ لَهُمْ مَا اسْتَغْفَرُوْنِیْ या'नी मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक वोह मुझ से मग़्फ़िरत मांगते रहेंगे मैं उन की मग़्फ़िरत करता रहूंगा।'' (مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۵۸، حدیث: ۱۱۲۳۷)

याद रखिये ! इस्तिग़्फ़ार जहां गुनाहों से आलूदा दिल का मैल साफ़ करने का सबब है, वहीं एक बेहतरीन दुआ़ भी है और आसानी से नेकियां कमाने का ज़रीआ़ भी। ह़दीसे पाक में है कि जो शख़्स मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये इस्तिग़्फ़ार (मग़्फ़िरत की दुआ़) करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे हर मोमिन मर्द व औ़रत के बदले में एक नेकी अ़त़ा फ़रमाता है।

(کنز العمال، ج ۱، حصہ اول، ص ۲۴۱، کتاب الاذکار، الفصل الاول فی الاستغفار، حدیث: ۲۰۶۴)

www.dawateislami.net

लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब भी अपने लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ करें तो अपने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को भी इस में ज़रूर शामिल करें। मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 419 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब '**मदनी पन्ज सूरह**' के सफ़ह़ा नम्बर 140 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बे जुल जलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जिस ने इस्तिग़्फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा और हर तंगी से उसे राह़त अ़त़ा फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।" (ابنِ ماجہ، کتاب الادب، باب الاستغفار ۲۵۷/۴ حدیث:۳۸۱۹)

मुझ ख़त़ाकार पर भी अ़त़ा कर — बे सबब बख़्श दे रब्बे अक्बर
मुझ को दोज़ख़ से डर लग रहा है — या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है
मग़्फ़िरत का हूं तुझ से सुवाली — फेरना अपने दर से न ख़ाली
मुझ गुनाहगार की इल्तिजा है — या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135-136)

किताब 'मदनी पन्ज सूरह' का तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो हम ने इस्तिग़्फ़ार की फ़ज़ीलत सुनी येह '**मदनी पन्ज सूरह**' से बयान की गई है। '**मदनी पन्ज सूरह**' दर ह़क़ीक़त शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की, 419 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल वोह माया नाज़ तालीफ़ है जो मश्हूर क़ुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूह़ानी व त़िब्बी इलाजों और ख़ुश्बूदार मदनी फूलों का दिलचस्प मदनी गुलदस्ता है, येह इस क़दर अहम किताब है कि हर घर में इस का होना निहायत ज़रूरी है। जी हां ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ख़ुद इस के बारे में इरशाद फ़रमाते हैं कि '**मदनी पन्ज सूरह हर घर की ज़रूरत है।**' लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई येह किताब न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ें बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दूसरों को भी तोह़्फ़े में पेश करें या उन्हें हदिय्यतन ले कर पढ़ने का मश्वरा दें।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो रजबुल मुरज्जब का पूरा महीना ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से रह़मतों और बरकतों की छमा छम बरसात लिये हुवे है, मगर मुख़्तलिफ़ रिवायात से येह भी मा'लूम होता है कि इस का पहला और सत्ताईसवां (27) दिन निहायत ही ख़ुसूसिय्यत का ह़ामिल है, लिहाज़ा इन में इ़बादत का ख़ास एहतिमाम करना चाहिये। जैसा कि

रजब के ख़ास दिन और रातें

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इस माह की पहली शब को ख़ास एहतिमाम के साथ इ़बादत किया करते थे। मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दस्तूर (त़रीक़ा) था कि आप साल में चार रातें हर काम से ख़ाली कर के इ़बादत के लिये मख़्सूस फ़रमाया करते थे। (या'नी इन चार रातों में ख़ास त़ौर पर इ़बादत फ़रमाते थे और वोह येह हैं) माहे रजब की पहली रात, ईदुल फ़ित्र की रात, ईदुल अज़्ह़ा की रात और माहे शा'बान की पन्दरहवीं रात। (غنیۃ الطالبین ص۳۵۹)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : साल में पांच रातें ऐसी हैं जो इन की तस्दीक़ करते हुवे ब निय्यते सवाब इन को इ़बादत में गुज़ारेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे दाख़िले जन्नत फ़रमाएगा (इन में से एक रात) रजब की पहली रात (भी) है। (غُنیۃ الطالبین ص ۲۳۶ ملخصا، دار احیاء التراث العربی بیروت)

जिस त़रह़ रजब की पहली शब निहायत अहम है, इसी त़रह़ इस की सत्ताईसवीं तारीख़ भी बहुत फ़ज़ीलत वाली है, क्यूंकि येही वोह अ़ज़ीम रात है, जिस में प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ पहली वह़ी भेजी गई और इसी रात में सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मे'राज के लिये तशरीफ़ ले गए। येही वजह है कि सत्ताईसवीं शब में इ़बादत करने और इस के दिन में रोज़ा रखने वाले ख़ुश नसीबों को ढेरों अज्रो सवाब अ़त़ा किया जाता है।

आइये इस ज़िम्न में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं :

﴿1﴾ सत्ताईस रजब को मुझे नबुव्वत अ़त़ा हुई जो इस दिन का रोज़ा रखे और इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ करे, दस बरस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10 स. 648, फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1367)

﴿2﴾ सत्ताईस रजबुल मुरज्जब में नेक अ़मल करने वाले को 100 बरस का सवाब मिलता है।

(شُعَب الایمان ج ۳ ص ۳۷۴ حدیث ۳۸۱۲)

﴿3﴾ रजब में एक दिन और एक रात है, जो उस दिन का रोज़ा रखे और वोह रात नवाफ़िल में गुज़ारे, येह सो बरस के रोज़ों के बराबर हो। और वोह सत्ताईसवीं रजब है। इसी तारीख़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मबऊ़स फ़रमाया। (شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۳۷۳ حدیث ۳۸۱۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हम जैसे गुनाहगारों के लिये रजबुल मुरज्जब की सत्ताईसवीं तारीख़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़त़ा कर्दा कैसा अ़ज़ीमुश्शान तोह़फ़ा है कि जो शख़्स इख़्लास के साथ इस का रोज़ा रखे, उस के दस साल के गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं नीज़ जिस ख़ुश नसीब को इस रात में नवाफ़िल पढ़ने और इ़बादत करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाए, उसे 100 साल के रोज़ों के बराबर सवाब अ़त़ा किया जाता है। अगर हम भी सत्ताईसवीं शब इ़बादत में गुज़ारें और दिन का रोज़ा रखें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से क़वी उम्मीद है कि येह तमाम फ़ज़ाइल हमें भी ह़ासिल हो सकते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़्त शबे मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिलसिले में हर साल सत्ताईसवीं रजबुल मुरज्जब को मुतअ़द्दिद मक़ामात पर इजतिमाआ़ते ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया जाता है। लिहाज़ा अगर हम येह अ़ज़ीमुश्शान रात आसानी से इ़बादते इलाही में गुज़ारने के ख़्वाहिश मन्द हैं तो हमें चाहिये कि आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में ज़िक्रो ना'त के इन बा बरकत इजतिमाआ़त में लाज़िमी शिर्कत करें और ज़हे नसीब कि रोज़ा रखने की भी सआ़दत ह़ासिल करें, इस त़रह़ ब आसानी हमारी सारी रात इ़बादत में भी गुज़र जाएगी और दिन में रोज़े की सआ़दत भी ह़ासिल हो जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सांसों का कोई भरोसा नहीं, न जाने कब येह सांसें रुक जाएं और इस के साथ साथ हमारे आ'माल का सिलसिला मौक़ूफ़ हो जाए। लिहाज़ा नेकियों का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने दें, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ज़िन्दगी में एक बार फिर रजब का मुबारक महीना नसीब हुवा तो हमें चाहिये कि इसे अपनी ख़ुश क़िस्मती समझते हुवे सिर्फ़ पहली और सत्ताईसवीं का रोज़ा रखने के बजाए जितना बन पड़ा, इस माह के अक्सर अय्याम रोज़े के साथ गुज़ार दें, क्या ख़बर येही हमारी ज़िन्दगी का आख़िरी रजब हो, अह़ादीसे मुबारका में रजब के नफ़्ली रोज़ों के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। आइये ! इस ज़िम्न में 4 अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं :

नफ़्ली रोज़ों के अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल

﴾1﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : रजब के रोज़ादारों के लिये जन्नत में एक महल है। (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۶۸حدیث۳۸۰۲) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1365)

﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत में एक नह्र है जिसे 'रजब' कहा जाता है जो दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस नह्र से सैराब करेगा। (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۶۷حدیث۳۸۰۰)(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1362)

﴾3﴿ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : रजब के पहले दिन का रोज़ा तीन साल का कफ़्फ़ारा है और दूसरे दिन का रोज़ा दो सालों का और तीसरे दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है। (الجامع الصَّغیر حدیث ۵۰۵۱ ص ۳۱۱)(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1362)

﴾4﴿ रह़मते आ़लमिय्यान, नबिय्ये ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने रजब का एक रोज़ा रखा तो वोह एक साल के रोज़ों की त़रह़ होगा, जिस ने सात रोज़े रखे, उस पर जहन्नम के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे, जिस ने आठ रोज़े रखे उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, जिस ने दस रोज़े रखे, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमाएगा और जिस ने पन्दरह (15) रोज़े रखे तो आस्मान से एक मुनादी निदा (या'नी ए'लान करने वाला ए'लान) करता है कि तेरे पिछले गुनाह बख़्श दिये गए, पस तू अज़ सरे नौ अ़मल शुरूअ़ कर कि तेरी बुराइयां नेकियों से बदल दी गईं और जो ज़ाइद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे और ज़ियादा अज्र देगा। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۶۸حدیث۳۸۰۱) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1365)

﴾5﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : क़ियामत के दिन रोज़े दार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोज़े की बू से पहचाने जाएंगे, उन के लिये दस्तर ख़्वान और पानी के कूज़े रखे जाएंगे, जिन पर मुश्क से मोहर होगी, उन्हें कहा जाएगा कि खाओ कल तुम भूके थे, पियो कल तुम प्यासे थे, आराम करो कल तुम थके हुवे थे, पस वोह खाएंगे, पियेंगे और आराम करेंगे ह़ालांकि लोग ह़िसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे। (کنزالعمال ج۸ص۳۱۳حدیث۲۳۶۳۹والتدوین فی اخبار قزوین ج۲ص۳۲۶)(फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 1340)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि रजबुल मुरज्जब के रोज़े रखने वालों के तो वारे ही न्यारे हैं । रजबुल मुरज्जब के रोज़े रखने वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में ख़ास महल तय्यार फ़रमाया है, उन ख़ुश नसीबों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ 'रजब' नामी नहर से सैराब फ़रमाएगा, उन के लिये जहन्नम के दरवाज़े बन्द और जन्नती दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, उन के रोज़े गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाएंगे और रोज़े महशर की ना क़ाबिले बरदाश्त गर्मी और भूक प्यास में उन के खाने पीने और आराम करने का बन्दोबस्त किया जाएगा ।

नफ़्ली रोज़ों के इस क़दर ज़बरदस्त फ़ज़ाइल व बरकात सुनने के बा'द तो हम में से हर एक को चाहिये कि फ़र्ज़ रोजों के साथ साथ नफ़्ली रोज़ों का भी ब कसरत एहतिमाम किया करे, माहे रजबुल मुरज्जब के आने से तो वैसे ही रोज़े रखने का गोया मौसिम शुरूअ़ हो जाता है । पहले रजबुल मुरज्जब के रोज़े फिर इस के बा'द माहे शा'बान के रोज़े । हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शा'बान के ब कसरत रोज़े रखा करते थे । उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मैं ने शा'बान से ज़ियादा किसी महीने में रोज़ा रखते न देखा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिवाए चन्द दिन के पूरे ही महीने के रोज़े रखा करते थे ।

(ترمذی ج۲ص۱۸۲حدیث ۷۳۶) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1340)

इस लिये हमें भी शा'बान के रोज़े रखते हुवे इस्तिक़्बाले माहे रमज़ान करना चाहिये । फिर रमज़ान के रोज़े तो हैं ही फ़र्ज़, इस के बा'द माहे शव्वाल के छे (6) रोज़े भी रखने चाहियें ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे, फिर इन के बा'द छे (6 रोज़े) शव्वाल में रखे । तो वोह ऐसा है जैसे दहर का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा ।

(صحیح مسلم ص۵۹۲حدیث ۱۱۶۴) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1, स. 1401)

और ज़हे नसीब कि इन महीनों के रोज़े रखने के साथ साथ हमें हर पीर शरीफ़ का रोज़ा रखने की भी सआ़दत ह़ासिल हो जाए ।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को नफ़्ली रोज़ों से इस क़दर प्यार है कि साल के ममनूअ़ दिनों के इलावा अक्सर रोज़ादार होते हैं । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मुरीदीन व मुह़िब्बीन को भी पूरे माहे रजब व शा'बान के रोज़े रखने नीज़ हर पीर शरीफ़ का रोज़ा रखने की भी भरपूर तरग़ीब दिलाते हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरग़ीब की ब दौलत बहुत से इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें रजबुल मुरज्जब और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के पूरे वरना अकसर दिन रोज़े रखने की भी सआ़दत ह़ासिल करते हैं । और पीर शरीफ़ का रोज़ा रखने वालों की तो अच्छी ख़ासी ता'दाद है, क्यूंकि पीर शरीफ़ का रोज़ा रखना तो मदनी इन्आ़मात में भी शामिल है । चुनान्चे, मदनी इन्आ़म नम्बर 58 में है : **क्या आप ने इस हफ़्ते पीर शरीफ़ (या रह जाने की सूरत में किसी भी दिन) का रोज़ा रखा ? नीज़ इस हफ़्ते कम अज़ कम एक दिन खाने में जव शरीफ़ की रोटी तनावुल फ़रमाई ?**

इ़बादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल
रजब का वासित़ा देता हूं फ़रमा दे करम मौला

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का नफ़्ली रोज़ों की तरग़ीब और फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल एक ख़ूब सूरत मक्तूब सुनते हैं :

मक्तूबे अ़त्तार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِيَ عَنْهُ की जानिब से, तमाम इस्लामी भाइयों, इस्लामी बहनों, मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना के असातिज़ा, त़लबा, मुअ़ल्लिमात और त़ालिबात की ख़िदमात में का'बए मुशर्रफ़ा के गिर्द घूमता हुवा गुम्बदे ख़ज़रा को चूमता हुवा रजबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और रमज़ानुल मुबारक के रोज़ादारों की बरकतों से माला माल झूमता हुवा सलाम :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَالٍ

हो न हो आज कुछ मेरा ज़िक्र हुज़ूर में हुवा वरना मेरी त़रफ़ ख़ुशी देख के मुस्कुराई क्यूं ?

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 97)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक बार फिर ख़ुशी के दिन आने लगे, माहे रजबुल मुरज्जब की आमद आमद है। इस माहे मुबारक में इबादत का बीज बोया जाता, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में नदामत के अश्कों से आब पाशी की जाती और माहे रमज़ानुल मुबारक में रह़मत की फ़स्ल काटी जाती है।

तीन माह के रोज़े

रजबुल मुरज्जब के क़द्र दानो ! ता'लीम व तअ़ल्लुम (या'नी सीखने और सिखाने) और कस्बे ह़लाल में रुकावट न हो, मां-बाप भी बे सबब मन्अ़ न करें, किसी की भी ह़क़ तलफ़ी न होती हो तो जल्दी जल्दी और बहुत जल्दी मुसलसल तीन माह के या रमज़ानुल मुबारक के मुकम्मल फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ जिस से जितने बन पड़ें उतने नफ़्ल रोज़ों के लिये कमर बस्ता हो जाए, सह़री और इफ़्त़ार में कम खा कर पेट का क़ुफ़्ले मदीना भी लगाए। काश ! हर घर में और मेरे जुम्ला मदारिसुल मदीना और तमाम जामिआ़तुल मदीना में रोज़ों की बहारें आ जाएं, बस पहली रजब शरीफ़ से ही रोज़ों का आग़ाज़ फ़रमा दीजिये।

रजब के इब्तिदाई तीन रोज़ों की फ़ज़ीलत

रजब शरीफ़ के इब्तिदाई तीन रोज़ों के फ़ज़ाइल की भी क्या बात है ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "रजब के पहले दिन का रोज़ा तीन साल का कफ़्फ़ारा है और दूसरे दिन का रोज़ा दो साल का और तीसरे दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है।"

(اَلْجَامِعُ الصَّغِيْر لِلسُّيُوطِی ص ۳۱۱ حدیث ۵۰۵۱، فَضَائِلُ شَهْرِ رَجَب لِلخَلّال ص ۲۴)

मैं गुनहगार गुनाहों के सिवा क्या लाता ? नेकियां होती हैं सरकार नेकूकार के पास

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नफ़्ली रोज़ों के भी क्या फ़ज़ाइल हैं ! इस ज़िम्न में दो अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

﴾1﴿ फ़िरिश्ते दुआए मग़फ़िरत करते हैं

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे उ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे यहां तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा बरकत में खाना पेश किया तो इरशाद फ़रमाया : तुम भी खाओ । मैं ने अ़र्ज़ की : मैं रोज़े से हूं । तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है, फ़िरिश्ते उस (रोज़ादार) के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करते रहते हैं । (سُنَنِ ترمذی ج ۲ ص ۲۰۵ حدیث ۷۸۵)

﴾2﴿ रोज़ादार की हड्डियां कब तस्बीह़ करती हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते मुअ़ज़्ज़म में ह़ाज़िर हुवे, उस वक़्त हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नाश्ता कर रहे थे, फ़रमाया : **''ऐ बिलाल ! नाश्ता कर लो ।''** अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं रोज़ादार हूं ।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम अपनी रोज़ी खा रहे हैं और बिलाल का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है । ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें ख़बर है कि जब तक रोज़ादार के सामने कुछ खाया जाए तब तक उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं, उसे फ़िरिश्ते दुआ़एं देते हैं । (شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۲۹۷ حدیث ۳۵۸۶)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि अगर खाना खाते में कोई आ जाए तो उसे भी खाने के लिये बुलाना सुन्नत है, मगर दिली इरादे से बुलाए झूटी तवाज़ोअ़ न करे, और आने वाला भी झूट बोल कर येह न कहे कि मुझे ख़्वाहिश नहीं, ताकि भूक और झूट का इजमाअ़ न हो जाए, बल्कि अगर (न खाना चाहे या) खाना कम देखे तो कह दे : بَارَکَ اللّٰہ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरकत दे) येह भी मा'लूम हुवा कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी इबादात नहीं छुपानी चाहियें बल्कि ज़ाहिर कर दी जाएं ताकि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर गवाह बन जाएं । येह इज़्हार रिया नहीं । (ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल के रोज़े का सुन कर जो कुछ फ़रमाया गया उस की शर्ह़ येह है) या'नी आज की रोज़ी हम तो अपनी यहीं खाए लेते हैं और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस के इ़वज़ (ع۔وض) जन्नत में खाएंगे वोह इ़वज़ (या'नी बदला) इस से बेहतर भी होगा और ज़ियादा भी । ह़दीस बिल्कुल अपने ज़ाहिरी मा'ना पर है, वाक़ेई उस वक़्त रोज़ादार की हर हड्डी व जोड़ बल्कि रग रग तस्बीह़ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान) करती है, जिस का रोज़ादार को पता नहीं होता मगर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुनते हैं । (مرآۃ ج ۳، ص ۲۰۲ بتغیر قلیل)

मुत़ालआ़ कर लिया हो तब भी दोनों रिसाले (1) **'कफ़न की वापसी मअ़ रजब की बहारें'** और (2) **'आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का महीना'** पढ़ लीजिये । नीज़ हर साल शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल का बाब 'फ़ैज़ाने रमज़ान' भी ज़रूर पढ़ लिया करें । हो सके तो ईदे मे'राजुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत से 127 या 27 रिसाले या ह़स्बे तौफ़ीक़ फ़ैज़ाने रमज़ान तक़्सीम फ़रमाइये और ढेरों ढेर सवाब कमाइये, तमाम इस्लामी भाइयों बिल उ़मूम और जामिआ़तुल मदीना और मदारिसुल मदीना के जुम्ला क़ारी साह़िबान, असातिज़ा, नाज़िमीन और त़लबा की ख़िदमतों में बिल ख़ुसूस तड़पती हुई मदनी अ़र्ज़ है कि बराहे करम ! (मेरे जीते जी और मरने के बा'द भी)

www.dawateislami.net

ज़कात, फ़ित्रा, कुरबानी की खालें और दीगर मदनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लिया कीजिये। (इस्लामी बहनें दीगर इस्लामी बहनों और मह़ारिम को मदनी अ़त़िय्यात की तरग़ीब दिलाएं) ख़ुदा की क़सम ! मुझे उन असातिज़ा और त़लबा के बारे में सुन कर बहुत ख़ुशी होती है जो अपने गाउं या शहर में जाने की ख़्वाहिश को क़ुरबान कर के रमज़ानुल मुबारक जामिअ़ात में गुज़ारते और अपनी मजलिस की हिदायात के मुत़ाबिक़ मदनी अ़त़िय्यात के बस्तों पर ज़िम्मेदारियां संभालते हैं, जो असातिज़ा और त़लबा बिग़ैर किसी उ़ज़्र के मह्ज़ सुस्ती या ग़फ़्लत के बाइ़स अ़दमे दिलचस्पी का मुज़ाहरा करते हैं उन की वजह से मेरा दिल रोता है।

ख़ुसूसी मदनी फूल : जो भी इस्लामी भाई या इस्लामी बहन मदनी अ़त़िय्यात इकठ्ठा करना चाहते हैं उन्हें चन्दे के ज़रूरी अह़काम मा'लूम होना फ़र्ज़ है, ताकीद है कि अगर पढ़ चुके हैं तब भी दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 100 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **'चन्दे के बारे में सुवाल जवाब'** का दोबारा मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रमज़ानुल मुबारक में मदनी अ़त़िय्यात और बक़र ईद में खालें जम्अ़ करने के लिये कोशिश कर के जो आ़शिक़ाने रसूल मेरा दिल ख़ुश करते हैं, तू उन से हमेशा हमेशा के लिये ख़ुश हो जा और उन के सदक़े मुझ गुनहगारों के सरदार से भी सदा के लिये राज़ी हो जा, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो इस्लामी भाई और इस्लामी बहन (उ़ज़्र न होने की सूरत में) हर साल तीन माह के रोज़े रखने और हर बरस जुमादल उख़रा में रिसाला **'कफ़न की वापसी'** और माहे रजबुल मुरज्जब में **'आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का महीना'** और शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में **'फ़ैज़ाने रमज़ान'** (मुकम्मल) पढ़ या सुन लेने की सआ़दत ह़ासिल करे मुझे और उस को दुन्या और आख़िरत की भलाइयां नसीब फ़रमा और हमें बे ह़िसाब बख़्श कर जन्नतुल फ़िरदौस में मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में इकठ्ठा रख।

اٰمین بجاہِ النبی الامین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से रजबुल मुरज्जब की 27 वीं शब, जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिलसिले में होने वाले इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में तमाम इस्लामी भाई अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा शिर्कत फ़रमाया कीजिये, नीज़ 27 **रजब शरीफ़ का रोज़ा रख कर** 60 **माह के रोज़ों के सवाब के ह़क़दार बनिये।**

रजब की बहारों का सदक़ा बना दे हमें आ़शिक़े मुस्त़फ़ा या इलाही

आंखों की ह़िफ़ाज़त के लिये मदनी फूल

पांचों वक़्त नमाज़ के बा'द सीधा हाथ पेशानी पर रख कर "یَانُوْرُ" 11 बार एक सांस में पढ़िये और दोनों हाथों की तमाम उंगलियों पर दम कर के आंखों पर फेर लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नाबीनाई, नज़र की कमज़ोरी और आंखों के जुम्ला अमराज़ से तह़फ़्फ़ुज़ ह़ासिल होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से अन्धा पन भी दूर हो सकता है।

मदनी इल्तिजा : येह मक्तूब हर साल जुमादल उख़रा की आख़िरी जुमा'रात को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ / जामिअ़तुल मदीना / मदारिसुल मदीना में पढ़ कर सुना दीजिये। (इस्लामी बहनें ज़रूरतन तरमीम फ़रमा लें) وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِكْرَام

www.dawateislami.net

मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में नेकियां करने, गुनाहों से बचने का ख़ूब ख़ूब ज़ेह्न दिया जाता है, नीज़ मुनज़्ज़म त़रीक़े से मदनी कामों को बढ़ाने के लिये मुतअ़द्दिद शो'बाजात भी क़ाइम किये गए हैं, इन्ही शो'बाजात में से एक 'मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह' भी है। इस में कोई शक नहीं कि ह़ज एक अहम, इ़बादत है, हर साल लाखों मुसलमान एक ही लिबास में रंग व नस्ल के इम्तियाज़ात मिटा कर और आपस में नफ़रतें और रन्जीशें भुला कर सर ज़मीने ह़रम पर इकठ्ठे होते हैं, जिन के इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद का येह अन्दाज़ देख कर पूरी दुन्या ह़ैरान होती है। येह लम्ह़ा उ़श्शाक़ के लिये किसी त़ौर पर ने'मते उ़ज़्मा से कम नहीं होता, क्यूंकि जब इन्हें रब عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से परवानए ह़ाज़िरी मिलता है तो इन का शौक़ दीदनी (या'नी देखने के क़ाबिल) होता है।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ह़ज पर जाने वाले इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की तर्बिय्यत पर भी ख़ुसूसी तवज्जोह दी और इन्हें बारगाहे ख़ुदावन्दी और बारगाहे मुस्त़फ़वी के आदाब सिखाने के लिये एक शोहरए आफ़ाक़ किताब **'रफ़ीकुल ह़रमैन'** त़हरीर फ़रमाई और मक्का व मदीना की फ़ज़ाओं में अपनी सांसों को मुअ़त्त़र करने के लिये जाने वालों को आदाब और दीगर ज़रूरी मसाइल वग़ैरा से आगाह करने के लिये **'मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह'** बनाई। चुनान्चे, हर साल ह़ज के **'मौसिमे बहार'** में ह़ाजी केम्पों में **'मजलिसे ह़ज्जो उ़मरह'** के ज़ेरे एहतिमाम दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन, ह़ाजियों की तर्बिय्यत करते हैं। ह़ज व जियारते मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में रहनुमाई के लिये मदीने के मुसाफ़िरों को ह़ज व उ़मरह की किताबें मसलन **रफ़ीकुल ह़रमैन** और **रफ़ीकुल मो'तमिरीन** भी मुफ़्त पेश की जाती हैं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने रजब की बहारों के मुतअ़ल्लिक़ सुना। सब से पहले हम ने रजबुल मुरज्जब की ता'ज़ीम करने वाले एक ग़ैर मुस्लिम की ह़िकायत सुनी कि जिस ने ग़ैर मुस्लिम होने के बा वुजूद रजबुल मुरज्जब की ता'ज़ीम करते हुवे जब गुनाह का इरादा तर्क कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे दौलते ईमान से माला माल फ़रमा दिया नीज़ येह भी पता चला कि रजब उन महीनों में से है कि जिन की ह़ुरमत व अ़ज़मत का ए'लान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में किया है। इस माहे मुक़द्दस में रोज़ों की भी बड़ी बरकतें हैं कि इस महीने के पहले दिन का रोज़ा तीन साल का कफ़्फ़ारा है और दूसरे दिन का रोज़ा दो सालों का और तीसरे दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर

www.dawateislami.net

दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है। और फिर रजब की सत्ताईसवीं रात की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत के लिये तो येही काफ़ी है कि इस में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मे'राज का अ़ज़ीम मो'जिज़ा अ़ता किया गया। इस दिन रोज़ा रखना 100 साल के रोज़ों के बराबर और इ़बादत करना 100 साल की इ़बादत के बराबर है। येही वजह है कि बुज़ुर्गाने दीन इस में इ़बादत व रोज़े का ख़ास एहतिमाम किया करते थे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें रजब में ख़ूब ख़ूब इ़बादत करने, ब कसरत इस्तिग़फ़ार करने और गुनाहों से सच्ची तौबा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में हिस्सा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अगर हम भी अपने अस्लाफ़ की सीरत पर अ़मल करते हुवे इ़ल्मे दीन हासिल करना, नेकियां करना, गुनाहों से बचना, फ़िक्रे आख़िरत के लिये कुढ़ना और ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्तफ़ा में ज़िन्दगी बसर करना चाहते हैं तो दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं और ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें। ज़ैली हल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम **'अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत'** भी है। नेकी की दा'वत देना तो ऐसा अहम फ़रीज़ा है कि तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام बल्कि ख़ुद सय्यिदुल अम्बिया, महबूबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी इस मक़्सद के लिये दुन्या में भेजा गया, इन मुक़द्दस हस्तियों ने ढेरों मुश्किलात और तक्लीफ़ें बरदाश्त कीं लेकिन नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने के इस अ़ज़ीम फ़रीज़े को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल हमें भी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सय्यिदुल अम्बिया (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इस प्यारी प्यारी सुन्नत पर अ़मल करने के लिये हर हफ़्ते **'अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत'** में शिर्कत करने की तरग़ीब दिलाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की बरकत से मस्जिद में नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ जाती है नीज़ बारहा ऐसा भी होता है कि अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के ज़रीए मुआ़शरे के बिगड़े हुवे अफ़राद दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हो कर सलातो सुन्नत पर अ़मल करने वाले बन जाते हैं, लिहाज़ा हमें भी वक़्त निकाल कर इस अ़ज़ीम मदनी काम में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिये।

आइये इस ज़िम्न में एक मदनी बहार सुनते हैं।

नियत साफ़ मन्ज़िल आसान

आ़शिक़ाने रसूल का एक मदनी क़ाफ़िला कपड़वन्ज (गुजरात, अल हिन्द) पहुंचा, 'अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत' के दौरान एक शराबी से मुडभेड़ हो गई, आ़शिक़ाने रसूल ने उस पर ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश की, जब उस ने सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे वालों की शफ़्क़तें और प्यार देखा तो हाथों हाथ उन के साथ चल पड़ा, आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत से गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ा ली, सब्ज़ इ़मामे का ताज भी सर पर सज गया, मदनी लिबास का भी ज़ेहन बन गया, छे दिन तक मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत हासिल कर सका, मज़ीद 92 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की मगर ज़ादे क़ाफ़िला (या'नी सफ़र के अख़राजात) न थे। एक दिन एक रिश्तेदार से मुलाक़ात हो गई, उस ने जब मुआ़शरे के बदनाम और शराबी को दाढ़ी, सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा और मदनी

www.dawateislami.net

लिबास में देखा तो देखता ही रह गया, जब उस को बताया गया कि येह सब मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत है और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अस्बाब हो जाने की सूरत में मज़ीद 92 दिन के सफ़र का अ़ज़्मे मुसम्मम है। तो उस रिश्तेदार ने कहा, पैसों की फ़िक्र मत करो। 92 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का ख़र्च मुझ से क़बूल कर लो और साथ में 92 दिन तक घर के अख़राजात भी अपने ज़िम्मे लेता हूं, यूं वोह 'दीवाना' 92 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया। (फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह, स. 17)

या ख़ुदा ! निकलूं मैं मदनी क़ाफ़िलों के साथ काश ! सुन्नतों की तर्बिय्यत के वासिते फिर जल्द तर !!
ख़ूब ख़िदमत सुन्नतों की हम सदा करते रहें मदनी माहोल ऐ ख़ुदा ! हम से न छूटे उ़म्र भर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۱۷، حدیث:۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

'इस्मिद' के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के चार मदनी फूल

सुनने इब्ने माजा की रिवायत में है : "तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा **'इस्मिद'** (اِثْمِد) है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।"

﴿2﴾ पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़सूद न हो तो कराहत नहीं।

(فتاوٰی عالمگیری ج۵ ص۳۵۹)

﴿3﴾ सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180)

﴿4﴾ सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

(1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां

(2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो,

(3) तो कभी दोनों आंखों में दो-दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी-बारी दोनों आंखों में लगाइये। (شُعَبُ الْاِیمان، ج ۵ ص ۲۱۸ - ۲۱۹) इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तीनों पर अ़मल होता रहेगा। याद रखिये ! तकरीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर बाईं आंख में।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, **'बहारे शरीअ़त'** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **'सुन्नतें और आदाब'** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

रहूं हर दम मुसाफ़िर काश 'मदनी क़ाफ़िलों' का मैं
करम हो जाए मौला ! गर, इनायत येह बड़ी होगी (वसाइले बख़्शिश, स. 393)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर **शबे जुमुआ़** (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की ज़ियारत करेगा** और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं !**

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे । (اَیضاً ص ٦٥)

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं । (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां : جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات)

(6) क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है ।(اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ١٢٥)

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

Translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net